द्वितीय प्रश्न पत्र : काव्यशास्त्र एवं साहित्य सिद्धांत

प्रस्तावना

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने ओर जाँचने-परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्य विषय

(क) संस्कृत काव्यशास्त्र : काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

- **रस-सिद्धांत** : रस का स्वरूप, रस-निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण धारणा।
- **अलंकार-सिद्धांत** : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।
- **रीति-सिद्धांत** : रीति की अवधारणा,काव्य-गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।
- **वक्रोक्ति-सिद्धांत** : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।
- **ध्वनि-सिद्धांत** : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धांत की प्रमुख स्थानाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत-व्यंग्य चित्र-काव्य।
- **औचित्य-सिद्धांत** : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

(ख) पाश्चात्य काव्यशास्त्र

- **प्लेटो** : काव्य-सिद्धांत।
- **अरस्तू** : अनुकरण- सिद्धांत विरेचन।
- **लोंजाइनस** : उदात्त की अवधारणा।
- **टी. एस. इलियट** : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निवैयक्तिकता का सिद्धांत, कविता का वस्तुनिष्ठ सिद्धांत, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

- **आई. ए. रिचर्डस** : रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।
- **सिद्धांत और वाद** : स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।
- **आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ** : संरचनावाद, उत्तर- आधुनिकतावाद।

(ग) **आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ** : ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, रूपवादी और समाजशास्त्रीय।

संदर्भ ग्रंथ :

1. रीति काव्य की भूमिका,डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. सिद्धांत और अध्ययन, बाबू गुलाबराय, आत्माराम एंड संस, दिल्ली।
3. काव्यशास्त्र, डॉ. भगीरथ मिश्र।
4. पाश्चात्य काव्य शास्त्र, विजय बहादुर सिंह, रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा।
5. उत्तर-आधुनिक साहित्य विमर्श, सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. देरिदा का विखण्डन और साहित्य, सुधीश पचौरी, आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा।
7. आलोचक और आलोचना, डॉ. बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।